वास्तु - वरदान

मनुष्य के पास खूब धन दौलत हो, खूब खाने पीने के लिये हो और कहि बैठकर वो आसानी से उसका उपभोग ना कर सके तो फिर किस बात का सुख हुआ । एक बड़ा सा घर हो और वो वंहा सुख की नींद ना ले सके, घर में कई लोग हो और वो आपस में हिलमिल कर ना रह सके तथा सदा वाद विवाद में घिरे रहे तो फिर किस बात का सुख हुआ ? अच्छे भले घर में सदा ही कोई ना कोई बीमार रहे तो फिर कंहा कोई प्रसन्न रह सकता हैं । ये सब क्यो होता हैं ? ये हमारे लिये वास्तु के दोष के कारण होता हैं । वास्तु क्या हैं ? वास्तु का शाब्दिक अर्थ तो कुछ अलग हो सकता हैं परन्तु इसका मूल मकसद कहें याँ मूल प्रभाव कहें तो वो हैं किसी जगह पर सुख और शाँती से रह पाना । अगर आप वास्तु के मुताबिक रहते हैं तो आप सुख शाँती से रह पाते हैं परन्तु अगर आपके घर में कोई वास्तु दोष हैं तो फिर सुख शाँती का होना कुछ मुश्किल सा होता हैं । क्या हैं वास्तु और क्या हैं वास्तु दोष ? आईये इसका विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं ।

भारतीय संस्कृति और भारतीय ज्ञान अंनत हैं और सबसे प्राचीन भी हैं । वेद हमारी सस्कृति के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं और हमारी सस्कृति ही क्या वेद तो मनुष्य जाती के सबसे पुराने ग्रन्थ हैं । इसे अब दुनिया के सब विद्वान और वैज्ञानिक मानते हैं । वेदो में भी वास्तु के विषय में बताया गया हैं हालाकि वेद पढ़ना सबके बस की बात नही हैं । क्योंकि इसमें सस्कृंत भाषा में बहुत ही जटीलता से सारे ज्ञान को समेटा गया हैं और प्रकृति और ब्रह्माण्ड के विषय में बताया गया हैं । सस्कृत भाषा में कम शब्दों में जो अधिकतम ज्ञान वेदों को समेटा गया हैं उसे जानने के लिये ज्ञान की पुर्णता होनी चाहिये और इस पुर्णता के लिये समय और तपस्या की आवश्यकता पड़ेगी । अब इस आधुनिक समय में जंहा मनुष्य को रोजी रोटी कमाने में ही जीवन गुजार देना हैं वंहा एसी फुर्सत और तपस्या की लगन कंहा से उत्पन्न होगी ?

वास्तु में कई एसे सिध्दात हैं जो आजकल भले ही ईस्तेमाल में ना हो परन्तु इनमें वास्तु के मूलभूत लाभ छुपे हुऐ हैं । जैसे सूर्य सक्रांती के एक निश्चित समय के दौरान पृथ्वी शयन अवस्था में होती हैं । शास्त्रों में बताया गया हैं कि एसे ही एक समय में पृथ्वी रजस्वाला भी होती हैं और कुछ विशेष समय में में पृथ्वी रूदन भी करती हैं । सुनने में और पढ़ने में ये बातें भले ही अटपटी लगे परन्तु इनके वैज्ञानिक कारण हैं । हम कभी कभी एसे भी पढ़ते हैं कि वास्तु को वास्तु-पुरूष कहा जाता हैं । दरअसल शास्त्रों में आकाश को पुरूष और पृथ्वी को स्त्री माना गया हैं । वास्तु के सभी प्रभाव आकाश की गतिविधियों से ही तय होते हैं । सूर्य के राशि बदलते ही ५, ७, ९, १५, और २१ वे दिन पृथ्वी शॉत हो जाती हैं इसे शास्त्रों में पृथ्वी का शयन करना कहते हैं । सूर्य सक्रांती के १, ५, १०, १६ और १९ वे दिन सूर्य की किन्ही विशेष किरणों के कारण पृथ्वी की जलवायु में परिवर्तन हो जाता हैं इसे शास्त्रों में पृथ्वी का रजस्वाला हो जाना कहते हैं। मास के सर्वथा अंतिम समय में जिसे हम घटी कह सकते हैं में, वर्ष के अंतिम दिन, अमावस्या, होली और प्रत्येक मंगलवार को पृथ्वी का रूदन होता हैं । इन सब सिध्दातो के पीछे शुध्द वैज्ञानिक आधार हैं और एसे समय में भुमि सुधार और भुमि की खरिद नही होनी चाहिये बहरहाल एसे में भूमि विक्रय अथवा बेचने का कार्य शुभ फल दिखा सकता हैं ।

जो भी हो, ये सब वास्तु के बहुत ही गहन और गहरे सिध्दात हैं जिनपर अगर पहले विचार नही किया गया हैं तो साधारण वास्तु शॉती और फेंग शुई जैसे साधारण उपायों से वास्तु दोष ठीक नही हो सकता हैं ।

बहरहाल बहुत पहले हिमालय पर्वत के जन्म से भी पहले पुराण और वेद प्रकट हुऐ थें । इनमें भारतवर्ष के विषय में और उसकी भौगोलिक स्थिति के विषय में वर्णन हैं । अब तो खैर वैसी स्थिति नही हैं परन्तु हमारे ऋषि मुनी बहुत पहले ही पृथ्वी और उसमें होने वाले बदलावों को अच्छी तरह जान गये थें ।

श्वेत वर्ण वाली भूमि ब्राह्मणी, लाल वर्ण वाली भूमि क्षत्रिया, पीले वर्ण वाली भूमि वैश्य और काले वर्ण वाली भूमि शूद्रा कहलाती हैं । ब्राह्मणी भूमि में अगर ब्राह्मणवास करे, क्षत्रिया भूमि में अगर क्षत्रिय वास करे, वैश्य वर्ण वाली भूमि में अगर वैश्य वास करें और शूद्रा भूमि में अगर शूद्र वास करें तो भूमि शुभ फल देने वाली होती हैं ।

जो भूमि पूर्व तथा उत्तर दिशा में क्रम से नीची हो अथवा समान हो याँ इशान कोण में नीची हो, देखने में सुन्दर मालूम पड़े, जहाँ से पहले कोई वास करके नही गया हो, एसी भूमि वास करने में शुभ हैं । जो भूमि दक्षिण पश्चिम में झुकी हुई हो, उपर हो, उँचे नीचे गड्ढों वाली हो और देखने से मन प्रसन्न नही होता हो, जहाँ वृक्ष की छाया दिन भर रहती हो एसी भूमि में वास नही करना चाहिये । इन दोनो से भिन्न लक्षणों वाली भूमि साधारण कहलाती हैं । एसी साधारण भूमि में देवी- देवताओं की पुजा अर्चना करके और ब्राह्मणों की आज्ञा से वास करना चाहिये ।

जब हम घर बनाते हैं तो इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि घर के आसपास कौन से पड़ आदि हैं इससे भी लाभ हानि का संकेत मिलता हैं । जैसे भविष्य पुराण में बताया गया हैं कि अशोक का पेड़ अगर घर के पास हो तो घर में रहने वालों की दुख तकलीफ कम होती हैं । प्लक्ष अथवा पाकड़ का पेड़ अगर घर के आसपास हो तो उत्तम जीवसाथी की प्राप्ती होती हैं । बिल्व का पेड़ अगर हो तो दीर्घ आयु होती हैं । जामुन का पेड़ होने से धन की प्राप्ती होती हैं । तेंदू का वृक्ष लगाने से कुल की वृध्दि होती हैं । अनार का वृक्ष होने से सुन्दर स्त्री की प्राप्ती होती हैं । आम का पेड़ हो तो मनोवाच्छित ईच्छज्ञ की पुर्ती होती हैं और अगर वट वृक्ष हो तो मोक्ष की प्राप्ती होती हैं । कदंब का पेड़ लगाने से अतुल्य धन राशि की प्राप्ती होती और लक्ष्मी की असीम कृपा

वास्तु - वरदान

होती हैं । इमली, कटहल, कोवांच और तितंडी का वृक्ष घर के आसपास नही होना चाहिये इससे धन, संतान और स्वास्थ की हानि होती हैं । अगर ये पेड़ आप अपने आसपास लगाना चाहें तो इसके लिये वैशाख मास सर्वश्रेष्ठ हैं और ज्येष्ठ मास सर्वाधिक हानिकारक हैं ।

बृहत संहिता में वाराह मिहिर कहते हैं कि जिस पेड़ पर पक्षियों के घोसलें हो, जो स्वंय गिर पड़ा हो, टूटा हो, जला हुआ हो, मंदिर यॉ श्मशान में हो, दूध वाला वृक्ष हो जैसे पीपल और वट वृक्ष एसे सभी पेड़ो की लकड़ी का ईस्तेमाल घर बनाने में नही करना चाहिये । अगर साल, शीशम और सागौन की मजबूत लकड़ी मिले तो घर बनाने के लिये सबसे उत्तम मानी गई हैं । बहेड़ा, नीम, अरणि, बच आदि वृक्षों की लकड़ी से कभी घर ना बनायें इससे लाभ नही परन्तु हानि अवश्य होगी ।

प्राचीन समय की बात हैं और शास्त्र एसा कहते हैं कि कोई अज्ञात नाम वाला एक मनुष्य प्रकट हुआ जिसने सारी पृथ्वी और आकाश को ढक लिया था । विस्मयातुर होकर सभी देवताओं ने उसे पकड़कर मुॅह के बल धरती पर फेंक दिया । भुमि पर मुॅह के बल गिरकर वो मनुष्य समाप्त हो गया और भूमि में विलिन हो गया । सकल देवता स्वरूप वह मनुष्य ब्रह्माजी की कल्पना अनुसार वास्तु पुरूष के रूप में स्थापित हो गया । उस मनष्य को मुॅह के बल भूमि पर फेंकने के दौरान जिस देवता ने उसे जंहा से पकड़ा था उसके उस अंग में उसी देवता का प्रभाव आ गया और अब भूमि में समा जाने के बाद भूमि से उसका वैसा ही प्रभाव उत्पन्न होता हैं ।

ब्रह्मा, अर्यमा, शिखी, दिती, भुजग, पुष्पदंत, इन्द्र, सूर्य, अनल, बृहक्षत, सविता, पितर, सोम, सत्य, विवस्वान, वरुण, यम, मल्हाट, आपवत्स, मुख्य, राजलक्ष्मी, पृथ्वीधर, भृंगराज, जयन्त, पर्जन्य, अदिती, असुर, वितथ, सावित्र, अतंरिक्ष, अनिल, यश, पूषा, गन्र्धव, मृग, दौवारिक, शोष, मित्र, नाग, रोग, पापयक्ष्मा, रूद्र और जय । ये वो देवता हैं जो हमारे घर में स्थान स्थान पर निवास करते हैं और वंहा से वैसा ही प्रभाव देते हैं जैसे इनका नाम हैं । इन देवताओं के स्थान पर हम जैसा ईस्तेमाल करेगें वैसा ही इन देवताओं का फल हमे मिलेगा । मान लिजिये कि इन्द्रके स्थान पर हम धन रखने का स्थान बनाते हैं तो वंहा से हमे इन्द्र का प्रभाव मिलेगा और धन संपती के कारण हमारा वैभव बढ़ता जायेगा परन्तु मान लिजिये कि इन्द्र के स्थान पर हमने बॉथरुम अथवा कचरा रखने का स्थान बना दिया तो दिन ब दिन धन संपती में कमी होती जायेगी और हम इसकी वजह से चिंतित रहेगें । बहरहाल इसके विषय में विस्तार से हम आगे बतायेगें ।

वास्तु में प्रत्येक बात का और गृह निर्माण का बहुत ही विस्तृत वर्णन मिलता हैं और उसमें से कई सध्दिांत और वास्तु के प्रभाव आज के दौर में अप्रसांगिक हो गये हैं । आपने देखा होगा कि कई लोग अपने घर के नाम कुछ इस तरह से रखते हैं जैसे लक्ष्मी मंदिर, शंकर भवन और विष्णु वंदन ईत्यादि ईत्यादि । ये सब वास्तु के अनुसार रखे हुए नाम होते हैं । वास्तु में एसा निर्देश हैं कि पत्थरों से बने घर को मंदिर कहते हैं । पकी हुई ईटो से बने घर को भवन कहते हैं । कच्ची ईंटो और मिटटी के गारे से बने घर को सुमन्त कहते हैं । सिर्फ मिटटी से बने घर को सुधार कहते हैं । लकड़ी से बने घर को मानस्य कहते हैं । केवल बॉसों से बने घर को वंदन कहते हैं । कपड़े से बने घर को विजय कहते हैं । घॉस फुस से बने घर को कालिभ कहते हैं । घर को बनाने में ईस्तेमाल की गई सामग्री से घर का नाम तय हो जाता हैं ।

कई बार इस बात से बड़ी उलझन हो जाती हैं कि घर का द्वार किस दिशा में रखा जाये इसलिये कि कोई वास्तुविद अगर कहें कि आपके घर का द्वार फंला फंला दिशा में होना चाहिये तो कभी कभी समस्या ये हो जाती हैं कि उस दिशा में द्वार नही बनाया जा सकता हैं । एसे में क्या करें ? इसका एक साधारण सा उपाय ये हैं कि अगर आपकी राशि कर्क, वृश्चिक और मीन हैं तो अपने घर का द्वार पुर्व दिशा में बनाये इसलिये कि ये राशियॉ ब्रहमण राशियॉ हैं और पूर्व दिशा में शुभ फल देती हैं । अगर आपकी राशि वृषभ, कन्या और मकर हैं तो अपने घर का द्वार आप दक्षिण दिशा में बनाये इसलिये कि ये राशियॉ वैश्य राशियॉ हैं और दक्षिण दिशा में शुभ फल देती हैं । हालाकि दक्षिण दिशा में द्वार बनाने को कई वास्तुविद मना करते हैं परन्तु राशि अनुसार आप इसे बना सकते हैं फिर भी विषय वास्तु का हैं इसलिये हम आपको आगे बतायेगें कि वास्तु के मुताबिक भी दक्षिण दिशा में द्वार बनाया जा सकता हैं । इसके लिये दक्षिण दिशा में हम उस देवता को चुनेगें जो कि दक्षिण दिशा में द्वार बनाने से भी लाभदायक सिध्द होता हैं । बहरहाल अगर आपकी राशि मेष, सिंह और धनु हैं तो आप घर का द्वार उत्तर दिशा में बना सकते हैं । इसलिये कि ये राशियॉ क्षत्रिय राशियॉ हैं और उत्तर दिशा में शुभ फल देती हैं । अगर आपकी राशि मिथुन, तुला और कुम्भ हैं तो अपने घर का द्वार पश्चिम दिशा में बना सकते हैं इसलिये कि ये राशियॉ शूद्र राशियॉ हैं और पश्चिम दिशा में शुभ फल देती हैं ।

कभी कभी एसा होता हैं कि हम द्वार तो सही स्थान पर बना लेते हैं परन्तु फिर भी वास्तु दोष उत्पन्नहो जाता हैं और हम समझ नही पाते कि क्या दोष हैं । ऐसे में कभी कभी द्वार के ठीक सामने गलियारा होता हैं जोकि वास्तु के मुताबिक दोषकारक माना गया हैं । अगर ये गलियारा द्वार की उॅचाई से ठीक दूगुना दूर हो तो ये दोषकार नही माना गया हैं । इसी तरह द्वार के ठीक सामने अथवा आसपास पेड़, कोना, कुऑ, खंभा और पानी कनलने का स्थान यॉ नाली हो तो भी ये दोष कारक होता हैं ।

द्वार के ठीक सामने गलियारा गृह स्वामी के लिये विनाश कारक सिध्द होता हैं । द्वार के ठीक सामने अथवा आसपास पेड़ हो तो बालकों के लिये स्वास्थ की समस्या बन रहती हैं । द्वार के ठीक सामन कीचड़ अथवा पानी का स्थान हो तो बहुत शोक कारक होता हैं । द्वार के ठीक सामने नाली हो तो धन नाश होता हैं । द्वार के ठीक सामने कुऑ हो तो मानसिक परेशानी होती हैं अथवा घर में किसी को मिर्गी की बीमारी हो जाती हैं । द्वार के ठीक सामने देव स्थान अथवा मंदिर हो तो गृह स्वामी का विनाश हो जाता हैं । द्वार के ठीक सामने कोई खंभा हो तो स्त्रीयों को परेशानी अथवा स्वास्थ की समस्या उत्पन्न हो जाती हैं । ब्रह्म स्थान दोषकारक हो गया हो अथवा द्वार के ठीक सामने ब्रह्मा की मुर्ति स्थापित हुई हो तो सारे कुल का ही नाश हो जाता हैं । इसके अलावा घर के द्वार स्वंय ही खुलने और बंद होने लगे तो समझ लें की घर में वास्तु दोष हैं ।

बहरहाल ध्यान रखें कि द्वार के ठीक उपर एक और द्वार नही बनाना चाहिये । चौड़ाई में कम द्वार भी अशुभ होता हैं । बहुत ज्यादा मोटा द्वार ढोलक

वास्तु - वरदान

के जैसा द्वार भी अशुभ होता हैं । इससे भुखमरी और खाने के लाले पड़े रहते हैं । तिरछा और एक तरफ को झुका हुआ द्वार वशं को नाश कर देता हैं । द्वार का उपरी भाग अगर निचले भाग से अधिक चौड़ा हो और द्वार घर के अंदर की तरफ झुका हुआ हो तो सभी प्रकार से जन, धन की हानि होती हैं । द्वार अगर बाहर की तरफ झुका हुआ होता हैं तो गृह स्वामी अक्सर प्रवास में ही रहता हैं । द्वार जिस दिशा में हो और उसकी विपरित दिशा में झुका हुआ हो जैसे पूर्व का द्वार पश्चिम की तरफ झुका हुआ हो तो चोर डाकुओं से भय बना रहता हैं ।

ध्यान रखें कि मुख्य द्वार की रूप सज्जा के समान घर के दूसरे द्वार नही होने चाहिये इससे मुख्य द्वार की प्रधानता समाप्त हो जाती हैं । मुख्य द्वार को कुम्भ, फल, पल्लव, शिवजी के गण, नारिकेल, लता, सिंह, सर्प, हंस आदि की प्रतिकृतियों स सुसज्जित करना चाहिये । इससे घर में आने वाले के विचार गृह स्वामी के लिये सकारात्मक हो जाते हैं ।

इस सारे विश्लेषण में एक बात का ध्यान रखें कि घर के बीचों बीच का स्थान ब्रह्मा का माना गया हैं और इसे सुरक्षित रखा जाना चाहिये । सुरक्षित रखने से तात्पर्य ये हैं के इस स्थान पर खुदाई, गड़ाई और अव्यवस्था नही होनी चाहिये अन्यथा घर का वातावरण अशांत होने लगता हैं । इस स्थान पर कोई स्तंभ अथवा खंभा नही बनाना चाहिये परन्तु फिर भी कभी कभी उलझन खड़ी हो जाती हैं कि उस स्थान पर स्तंभ अथवा खंभा खड़ा किये बिगैर गृह निर्माण मुश्किल हो जाता हैं । एसे में क्या करें ? एसे में बृह्म स्थान पर मर्म स्थानो को ढूढना चाहिये , इन मर्म स्थान को बचाकर अगर आप घर के बीचों बीच खंभा अथवा स्तंभ बनाते हैं तो वास्तु दोष का निवारण हो जायेगा और आपका गृह निर्माण भी नही रुकेगा । इन मर्म स्थानो को ढूढने का तरिका ये हैं कि गृह निर्माण के दौरान चारो कोनों को मिलाने वाली तीन तीन रेखाऐं इस तरह बनाये कि हर कोने से तीन तीन रेखाऐ निकलती दिखाई दे । अब ये तीन रेखाऐं ठीक बीच में ऐक दूसरे को काटती दिखाई देगी । जंहा ये रेखाऐं ऐक दूसरे को काटती दिखाई दे समझ लिजिये कि वही ब्रह्म स्थान के मर्म स्थान हैं और ईन्हे बचाकर आप अपने घर का निर्माण जारी रख सकते हैं ।

वास्तु के ये नियम बहुत प्राचीन और वैज्ञानिक आधार पर बनाये गये नियम हैं । हमारे ऋषि, मुनि भारत की भूमि के विषय में तब से जानते थे जबकि पश्चिमी सभ्यता अभी विकसित भी नही हुई थी । तब जब केवल भारतवर्ष ही कर्म और धर्म के योग के लिये मुख्य भुमि था । तब जब अभी हिमालय पर्वत भी नही जन्मा था हमारे ऋषि मुनियों के पास तबसे भारतवर्ष की भूमि की विशेष जानकारी रही हैं । वास्तु शब्द सभी प्रकार के निर्माण का वाचक शब्द हैं । मत्स्य पुराण में कहा हैं कि, "वसन्ति प्राणिनो यत्र" अर्थात निर्माण करने योग्य भूमि का नाम भी वास्तु हैं । मत्स्य पुराण में ही एक और कथा हैं जिसमें दर्शाया गया हैं कि शिवजी के पसीने से वास्तु पुरुष का जन्म हुआ था । ये एक लंबी कथा हैं जिसमें वास्तु के विषय में अंलकारिक ढंग से बहुत विस्तृत जानकारी हैं । इसे आप मत्स्य पुराण में वास्तुदभव अध्याय में देख सकते हैं ।

भूगर्भ शास्त्री कहते हैं कि आज जंहा हिमालय हैं कभी वंहा टिथिस नामक समुन्द्र हुआ करता था । ये बताने का तात्पर्य केवल इतना हैं कि विज्ञान भी मानता हैं कि हिमालय पर्वत श्रंखला अधिक प्राचीन नही हैं । हमारे शास्त्र कहते हैं कि कभी जब हिमालय प्रकट नही हुआ था भारतवर्ष का नाम अजनाभ वर्ष हुआ करता था । फिर हिमालय के प्रकट होने की प्रक्रिया के दौरान से इसका नाम हिमनदंनवर्ष पड़ा और हिमालय ने जब प्रकट होकर एक सीमा रेखा को तय कर दिया तो इसका नाम भारतवर्ष पड़ गया ।

भारतवर्ष और आजके भारत में बहुत अंतर हैं । जिस भारतवर्ष की हम बात कर रहे हैं वो भारतवर्ष उस जमाने में पश्चिम की ओर अजरबैजान तक फैला था जिसे उस समय आर्यबीज कहा जाता था । कैस्पीयन सागर भी उसकी सीमा में था और उस समय इसी कैस्पीयन सागर को कश्यप सागर कहा जाता था । उत्तर दिशा में ये आजके साइबेरिया तक फैला था जिसे उस जमाने में शिविर कहा जाता था । आजभी रूसी लोग साइबेरिया को सिविर ही कहते हैं । पूर्व में ये चीन और मगोंलिया तक फैला था जिसे उस जमाने में भद्राश्व कहते थे । भद्राश्व अर्थात कल्याणकारी घोड़ा । भारतीय इतिहास में अगर आप जायेगें तो आपको पता चलेगा कि ये कल्याणकारी घोड़ा कैसे कालांतर में चीन बना । बहरहाल दक्षिण दिशा में हमारा भारत था जिसे उस जमाने में जंबू द्वीप के नाम से जाना जाता था ।

से सब बताने से हमारा उद्देश्य केवल इतना हैं कि भारतीय वास्तु अति प्राचीन और भूमि के व्यवहार और सम्पुर्ण भूगोल की जानकरी से निर्मित हैं । भारत की जलवायु के अनुसार हमारे वास्तु का निर्माण हुआ हैं जबकि हिमालय पर्वत के प्रकट होने से चीन की जलवायु में बदलाव आया और उसके अनुसार वंहा फेंग शुई का निर्माण हुआ हैं जोकि हमारे ही भारतीय वास्तु का बदला हुआ रुप हैं ।

अब आगे हम ८१ पद वास्तु के विषय में बता रहे हैं जोकि चतुष्कोण हैं और साधारणयता जनजीवन में इसी रुप में घर बनाने की प्रथा हैं । किसी भी घर बनाने की प्रक्रिया स्वरूप चार कोने सर्वाधिक प्रचलित हैं । इसे वास्तु में ८१ पद वास्तु कहते हैं । साधारणयता दक्षिण दिशा में मुख्य द्वार बनाने की मनाही की जाती हैं । अगर आपके सामने दक्षिण में द्वार बनाना आवश्यक हैं तो आप देख लें कि आप कंहा द्वार बना सकते हैं । दक्षिण दिशा को बराबर के नौ भागों में बॉट लें और उन्हे इस प्रकार नाम देदें । इन नौ भागों के देवता इस प्रकार होगें १, अनल २, पूषा ३, वितथ ४, बृहक्षत ५, यम ६, गंर्धव ७, भृंगराज ८, मृग और नौवां पितर ।

दक्षिण दिशा में अगर अनल पद में मुख्यद्वार होतो पुत्र संतान की कमी होती हैं । अगर बाद में घर लिया हैं और अनल पद में द्वार हैं तो पुत्र को कष्ट होगा । पूषा पद में मुख्य द्वार होतो सदा ही आदमी दास भाव से दुखी रहता हैं और जीवन सेवा और चाकरी में गुजरता हैं । वितथ पद में मुख्य द्वार होतो आदमी नीच कर्म करने वाला अथवा नीच आचरण वाला हो जाता हैं । अगर बृहक्षत पद में घर हो तो इसे शुभ माना जाता हैं , दक्षिण दिशा का यही एक स्थान हैं जंहा आप द्वार बना सकते हैं । यंहा मुख्य द्वार होने से अन्न और पुत्र संतान की वृध्दि होती हैं । यम पद में अगर मुख्य द्वार होतो सर्वथा अशुभ माना जाता हैं । गंर्धव पद में मुख्य द्वार होतो आदती कृतघ्न बन जाता हैं और दूसरे का किया भूल जाता हैं और इससे उसे अपयश का भागी बनना पड़ता हैं । भृगंराज पद में मुख्य द्वार होतो आदमी सदा निर्धन रहता हैं और धन के लिये चिंतित रहता हैं । मृग पद में मुख्य द्वार होतो पुत्र की शक्ति की हानि होती हैं और वो सदा ही लाचार और अस्वस्थ रहता हैं । पितर पद में मुख्य द्वार होतो पुत्रों को सदा ही कष्ट रहता हैं और वशं वृध्दि में क्षय होता हैं ।

वास्तु - वरदान

पूर्व

इशान								आग्नेय
शिखी	पर्जन्य	जयन्त	इन्द्र	सूर्य	सत्य	भृंश	अंतरिक्ष	अनल
दिती	आप	जयन्त	इन्द्र	सूर्य	सत्य	भृंश	सावित्र	पूषा
अदिती	अदिती	आपवत्स	अर्यमा	अर्यमा	अर्यमा	सविता	वितथ	वितथ
भुजग	भुजग	पृथ्वीधर	ब्रह्म	ब्रह्म	ब्रह्म	विवस्वान	बृहक्षत	बृहक्षत
सोम	सोम	पृथ्वीधर	ब्रह्म	ब्रह्म	ब्रह्म	विवस्वान	यम	यम
भल्लाट	भल्लाट	पृथ्वीधर	ब्रह्म	ब्रह्म	ब्रह्म	विवस्वान	गंर्धव	गंर्धव
मुख्य	मुख्य	राजयक्ष्मा	मित्र	मित्र	मित्र	इन्द्र	भृंगराज	भृंगराज
नाग	रुद्र	शोष	असुर	वरूण	पुष्पदंत	सुग्रीव	जय	मृग
रोग	पापयक्ष्मा	शोष	असुर	वरूण	पुष्पदंत	सुग्रीव	दौवारिक	पितर

उत्तर — दक्षिण

वायव्य — पश्चिम — नैऋत्व

इसी क्रम में पश्चिम दिशा में भी नौ भाग करके प्रत्येक भाग के देवता का एक एक पद मानेगें । १, पितर २, दौवारिक ३, सुग्रीव ४, पुष्पदंत ५, वरुण ६, असुर ७, शोष ८, पापयक्ष्मा और नौवॉ रोग । पितर पद दक्षिण और पश्चिम को मिलाने वाला कोना हैं इसलिये इसे दो बार लिखा गया हैं । बहरहाल पितर का फल वही हैं जो पहले लिखा जा चुका हैं । दौवारिक अशुभ देवता हैं इसलिये पश्चिम में दौवारिक पर मुख्य द्वार नही बनाना चाहिये इससे शत्रु की वृध्दि होती हैं । सुग्रीव शुभ देवता हैं इसलिये इस पद में मुख्य द्वार बनाने से धन, धान्य और पुत्र संतान की वृध्दि होती हैं । असुर अशुभ देवता हैं इसलिये इस पद में मुख्य द्वार बनाने से सरकार और राज्य से भय बना रहता हैं । पुष्पदंत पर द्वार बनाने से पत्नी अथवा स्त्रायों को करूट बना रहता हैं । वरुण शुभ देवता हैं से सभी प्रकार से लाभ देने वाला पद हैं यंहा द्वार बनाना शुभ होगा । शोष अशुभ देवता हैं इस पद पर द्वार बनाने से धन नाश होता हैं । पापयक्ष्मा तो नाम से ही पता चलता हैं कि अशुभ देवता हैं इस स्थान पर द्वार बनाने से कोई गंभीर रोग हो जाने का सदा डर बना रहता हैं । रोग तो नाम से ही रोग का पता देता हैं इसलिये इस स्थान पर द्वार बनाने से घर में रोग और बीमारियॉ बनी रहती हैं ।

उत्तर दिशा के नौ पद इस प्रकार हैं । १, शिखी २, दिती ३, अदिती ४, भुजग ५, सोम ६, भल्लाट ७, मुख्य ८, नाग और नौंवा रोग । यंहा रोग फिर आया हैं क्योंकि रोग उत्तर और पश्चिम को मिलाने वाला कोना हैं । बहरहाल रोग का फल पहले लिख चुके हैं इसलिये यंहा उसे उसी प्रकार से जाने और आगे नाग पद में अगर मुख्य द्वार होगा तो शत्रु का वृध्दि होगी । मुख्य पद शुभ देवता का हैं सो इस स्थान पर मुख्य द्वार बनाने से धन, धान्य और पुत्र से लाभ होगा । भल्लाट परम शुभ देवता हैं इस स्थान पर द्वार बनाने से सभी प्रकार के गुण और संपतियों का लाभ होगा । सोम पद पर द्वार बनाने से भावनात्मक रुप से हानि का संकेत होता हैं और पुत्र से द्वेष बढ़ता हैं । भुजग देवता भी साधारण फल देनेवाला देवता हैं इस पर भी द्वार बनाने से संतान से वाद विवाद बढ़ता हैं । अदिती स्थान पर मुख्य द्वार बनाने से स्त्री द्वारा कष्ट मिलता हैं । दिती पद पर द्वार बनाने से घर में निर्धनता का वास होता हैं । शिखी पर मुख्य द्वार बनाने से इशान कोण में द्वार होता हैं जिससे घर में अग्निभय बना रहता हैं ।

अब अंत में पूर्व दिशा की बात करते हैं । पूर्व दिशा के नौ पद इस प्रकार हैं । १, शिखी २, पर्जन्य ३, जयन्त ४,इन्द्र ५, सूर्य ६, सत्य ७, भृंश ८, अंतरिक्ष और नौवां अनल हैं । यंहा शिखी दो बार आया हैं क्योंकि शिखी उत्तर और पूर्व को मिलाने वाला कोना हैं तथा अनल भी दो बार आया हैं क्योंकि अनल भी पूर्व और दक्षिण को मिलाने वाला कोना हैं । इनके फल हम पहले लिख चुके हैं । अब आगे, पर्जन्य पद पर अगर मुख्य द्वार होतो कन्या संतान की अधिकता रहती हैं । जयन्त परम शुभ देवता हैं इस पद पर अगर द्वार बनाया जाये तो खूब धन लाभ होता हैं । इन्द्र पद पर अगर द्वार बनाया जाये तो सरकार और राज्य से सहुलियत मिलती हैं । सूर्य पर पर अगर मुख्य द्वार बनाया जाये तो आदमी क्रोधी स्वभाव को हो जाता हैं । सत्यपद पर अगर द्वार बनाया जाये तो आदमी झूठा और चालाक बनता हैं । भृंश पद पर अगर द्वार बनाया जाये तो आदमी क्रूर और बेरहम बन जाता हैं । अंतरिक्ष पद पर अगर मुख्य द्वार बनाया जाये तो आदमी में चोरी की प्रवृति आ जाती हैं ।

बहरहाल ये तो वो मुख्य बाते हैं जो आदमी सबसे पहले सोचता और करता हैं । वास्तु का विषय बहुत विस्तृत हैं केवल द्वार बना लेने से ही सब कुछ ठीक नही हो जाता हैं । अब आगे हम आपको घर के अंदर किस तरह के बदलाव अथवा कार्य हो इससे संबंधित बातें बतायेगें । ऑठ दिशाओ की क्या क्या विशेषताऐं हैं इस विषय में भी आपको बतायेगें । अगले अंक में जारी ----------